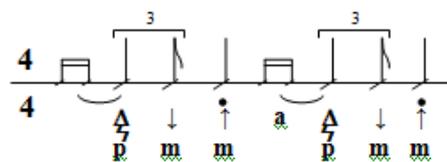


НАКРАПЫВАЛ ОСЕННИЙ ДОЖДИЧЕК...

В. Туриянский

Вступление: ④d d d ②h ③g (флажолеты на ④ ② ③ струнах на XII ладу)

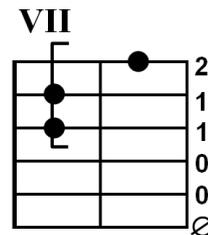
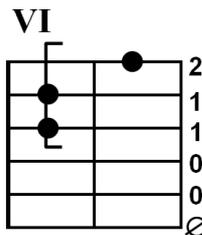
| | | | | |
|----------------|-------------|---|----------------|-----|
| | G | | Hm | Am |
| | | | 2/4 | 4/4 |
| На | крапывал | осенний | дождичек, | |
| См | | D ₇ D ^b ₇ D ₇ | G | |
| тихонечко | долбил | висок | | |
| | | | Hm | Am |
| | | | 2/4 | 4/4 |
| и | резал, | словно финский | ножичек, | |
| См | | D ₇ D ^b ₇ D ₇ | G | |
| офорт | в окне | наискосок. | | |
| H ₇ | | | Em | |
| Мерцал | серебряными | спицами, | | |
| Am | | D ₇ | G | |
| шуршал | в листве, | пугался | вдруг, | |
| Gm | | | A ₇ | |
| а | осень | мокрыми жар- | птицами | |
| См | | D ₇ D ^b ₇ D ₇ | G | |
| на юг | брела | от зимних | вьюг. | |



И наплывала, беспричинная,
 моя вечерняя тоска –
 про жизнь, что как дорога длинная,
 да в поле нет ни огонька...
 Куда пойдёшь, кому расскажешь,
 что надоело быть травой?
 И всё не так, а не докажешь.
 И надо быть самим собой.

D^b₇

D₇



А осень флагом карантинным
 туманит и наводит грусть.
 Дымок кружится никотиновый
 над старым ромом «Санта Крус».
 И там, в хрустальной мгле бокала,
 сквозь огонёк свечи в вине,
 фрегат смолёный от причала
 взлетит на кружевной волне.

Накрапывал осенний дождичек,
 тихонечко долбил висок
 и резал, словно финский ножичек,
 офорт в окне наискосок.

